सुरः मुल्क के महासिन

हज़रत अली बिन अबी तालिब अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि जनाब रसूले खुदा स० ने फ़रमाया जो शख़्स इस सूरः को पढ़ेगा वह क़यामत के रोज़ नजात पायेगा, मलाइका के परों पर उड़ेगा और जनाब यूसुफ जैसा हुस्न पायेगा और इमाम मुहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि सूरः मुल्क सूरः मानिआ है इस लिए कि बचाता है अपने पढ़ने वालों को अजाबे क़ब्र से और तौरेत में भी इसका नाम सुरः

सूरः मुल्क

मुल्क है जो शख़्स इस सूरः को ब वक़्त शब पढ़े तो साहिबे बरकत क़रार पायेगा और ख़ुश रहेगा और मैं इस सूरः को इशा के बाद पढ़ता हूं। और हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो शख़्स तबारकल्लज़ी पढ़ेगा ख़ास कर सोने से पहले तो वह हमेशा खुदा की अमान में रहेगा और क़यामत के रोज ख़ुदा की पनाह में होगा और इस सूरः को मुंजिया भी कहते हैं क्योंकि यह अजाबे कब्र से महफ़ूज़ रखने वाला है। जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमाया "इन्नहा वाक़िअतुन मिन अज़ाबिल क़ब्रि"

सूरह मुल्क

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम
इबतिदा अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

तबा-र-कल्लज़ी बि यदिहिल
जिस (ख़ुदा) के क़ब्जा में (सारे जहान की)
मुल्कु व हु-व अ़ला कुल्लि
बादशाहत है वह बड़ी बरकत वाला है और
शैइन क़दीर० अल्लज़ी ख़
वह हर चीज़ पर क़ादिर है जिसने मौत और

सूरः मुल्क

ल-कल-मौ-त वल हया-त
जिन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हें
लि यब्लु व-कुम अय्युकुम
आज़माये कि तुम में से काम में सबसे
अह्सनु अ-म-ला० व हुवल
अच्छा कौन है और वह ग़ालिब (और) बड़ा
अज़ीज़ुल ग़फ़ूर अल्लज़ी ख़-ल-क़
बख़्शने वाला है, जिसने सात आसमान तले
सब-अ़ समावतिन तिबाक़ा० व
ऊपर बना डाले भला तुझे ख़ुदा की
तरा फ़ी ख़ल्क़िर रह़मानि
आफ़रीनश में कोई कसर नज़र आती है तो
मिन तफ़ावुत० फ़रजिअ़ ल
फिर आंख उठा कर देख भला तुझे कोई
ब-स़-र० हल तरा मिन
शिगाफ़ नजर आता है, फिर दोबारा आंख
फ़ुतूर० सुम्मर जिअ़ ल
उठा कर देख तो (हर बार तेरी) नज़र
ब-स-र कर्रतैनि यंक़लि-ब
नाकाम और थक कर तेरी तरफ़ पलट

इलैकल ब-स-रु ख़ासिऔं व
आयेगी, और हमने नीचे वाले (पहले)
हु-व हसीर० व ल-क़द
आसमान को (तारों के) चिराग़ों से ज़ीनत
ज़ैय्यन्नस्समाअद्दुंया बि
दी है और हम ने उन को शैतान के मारने
मस़ाबी-ह व ज-अल्नाहा रुजू
का आला बनाया और हमने उनके लिए
मल लिश्शयातीनि व
देहकती हुई आग का अज़ाब तय्यार कर
अअ़्तदना लहुम अज़ाबस्सओ़र
रखा है और जो लोग अपने परवरदिगार के
व लिल-लज़ी-न क-फ़रू बि
मंकिर हैं उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है
रब्बिहिम अज़ाबु ज-हन्नम व
और वह बहुत बुरा ठिकाना है, जब यह
बिअसल मसीर० इज़ा उल्क़ू
लोग इस में डाले जायेंगे तो उसकी बड़ी
फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ौं व
चीख़ सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी,

सूरः मुल्क

लौ कुन्ना नस्मअु औ
तो (आज) दोज़ख़ियों में न होते, ग़र्ज वह
नअ़्कि़लु मा कुन्ना फ़ी
अपने गुनाहों का ऐतराफ़ कर लेंगे, तो
अस्हाबिस्सअ़ीर० फ़अ़ुत-र-फ़ू
दोज़ख़ियों को ख़ुदा की रहमत से दूरी है,
बि जंबिहिम फ सुहक़्ल लि
बेशक जो लोग अपने परवरदिगार से बे
अ र. ह. ा बि र-स अ. ी र०
देखे भाले डरते हैं उनके लिए मग़फ़िरत
इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न
और बड़ा भारी अज्र है, और तुम लोग
रब्बहुम बिल ग़ैबि लहुम
अपनी बात छुपा कर कहो या खुल्लम
मग़्फ़ि-रतुन व अज्रुन
खुल्ला वह तो दिल के भेदों तक से खूब
कबीर० व अ सिर्रु क़ौलकुम
वाक़िफ़ है भला जिसने पैदा किया है वह बे
अविज्हरू बिहि इन्नहु
ख़बर है वह तो बड़ा बारीक बीं और

हि-य तफ़ूर० तकादु तमय्यिजु
बल्कि गोया मारे जोश के फट पड़ेगी जब
मिनल ग़ैज़० कुल्लमा
इसमें (उन का) कोई गिरोह डाला जायेगा
उल्कि-य फ़ीहा फ़ौज़ुन
तो उन से दारोग़ा–ए–जहन्नम पूछेगा क्या
स-अ-ल-हुम ख़-ज़-न-तुहा
तुम्हारे पास कोई डराने वाला (पैगम्बर) नहीं
अलम यअतिकुम नज़ीर०
आया था? वह कहेंगे हां हमारे पास डराने
क़ालू बला क़द जाअ़ना
वाला ज़रूर आया था मगर हम ने उसको
नज़ीर० फ़ कज़्ज़ब्ना व
झुठला दिया और कहा कि ख़ुदा ने कुछ
कुल्ना मा नज़्ज़लल्लाहु मिन
नाज़िल नहीं किया तुम तो बड़ी (गेहरी)
शैइन इन अंतुम इल्ला फ़ी
गुमराही में (पड़े) हो, और (यह भी) कहेंगे
ज़लालिन कबीर० व क़ालू
कि अगर (उनकी बात) सुनते या समझते

सूरः मुल्क

अलीमुम बि ज़ातिस्सुदूर०
वाक़िफ़ कार है, वही तो है जिस ने ज़मीन
अला यअ़लमु मन ख़-ल-क़
को तुम्हारे लिए नर्म (व हमवार) कर दिया
व हु-वल लतीफ़ुल ख़बीर०
तो उसके अतराफ़ व जवानिब में चलो और
हुवल्लज़ी ज-अ ल लकुमुल
उसकी (दी हुई) रोज़ी खाओ और फिर
अर-ज़ ज़लूलन फ़म्शू फ़ी
उसी की तरफ़ (क़ब्र से) उठ कर जाना है,
मनाकिबिहा व कुलू मिर
क्या तुम उस शख़्स से (जो आसमान में)
रिज़्क़िहि व इलैहिन्नुशूर० अ
हकूमत करता है इस बात से बे ख़ौफ़ हो
अमिन्तुम मन फ़िस्समाइ
कि तुमको ज़मीन में धंसा दे फिर वह
अंय यख़्सि-फ़ बिकुमुल
यकबारगी उलट पलट कर लेंगे, या तुम
अर-ज़ फ़ इज़ा हि-य तमूर०
इस बात से बे ख़ौफ़ हो कि जो आसमान में

अम अमिंतुम मन फ़िस्समाइ
(सलतनत करता) है कि तुम पर पत्थर भरी
अंय युरसि-ल अ़लैकुम
आंधी चलाये तो तुम्हें अंक़रीब ही मालूम हो
हासिबा० फ़-स-तअ़-ल मू-न
जायेगा कि मेरा डराना कैसा है? और जो
कै-फ़ नज़ीर० व ल-क़द
लोग उनसे पहले थे उन्होंने झुठलाया था
कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन
तो (देखो) कि मेरी नाख़ुशी कैसी थी? क्या
क़ब्लिहिम फ़ कै-फ़ का-न
लोगों ने अपने सरों पर चिड़यों को उड़ते
नकीर० अ-व-लम यरौ इलत्तैरि
नहीं देखा जो परों को फैलाए रहती हैं और
फ़ौक़हुम साफ़्फ़ातिवं व
समेट लेती हैं कि ख़ुदा के सिवा उन्हें कोई
यक़्बिज़्-न मा युम्सिकुहुन-न
नहीं रोके रह सकता बेशक वह हर चीज
इल्लर रहमान० इन्नहु बि
को देख रहा है भला ख़ुदा के सिवा ऐसा

कुल्लि शैइम्बसीर० अम्मन
कौन है जो तुम्हारी फ़ौज बन कर तुम्हारी
हाज़ल्लज़ी हु व जुंदुल्लकुम
मदद करे, काफ़िर लोग तो धोखे ही धोखे
यंसुरुकुम मिन दूनिर
में हैं, भला ख़ुदा अगर अपनी (दी हुई)
रहमान० इनिल काफ़िरू-न
रोज़ी रोक ले तो कौन ऐसा है जो तुम्हें
इल्ला फ़ी गुरूर० अम्मन
रिज़्क़ दे मगर यह कुफ़्फ़ार तो सरकशी और
हाज़ल लज़ी यरज़ुकुकुम इन
नफ़रत (के भंवर) में फंसे हुए हैं, भला जो
अम-स-क रिज़्क़-हु बल्लज्जू
शख़्स औंधा अपने मुंह के बल चले वह
फ़ी अुतुव्विं व नुफ़ूर० अ फ़
ज़्यादा हिदायत याफ़्ता होगा या वह शख़्स
मंय यम्शी मुकिब्बन अ़ला
जो सीधा बराबर राहे रास्त पर चल रहा हो,
वज्हिहि अह्दा अम्मंय यम्शी
(ए रसूल) तुम कह दो कि ख़ुदा तो वही है

सूर: मुल्क

सविय्यन० अला सिरातिम
जिसने तुमको नित नया पैदा किया और
मुस्तक़ीम० कुल हुवल लज़ी
तुम्हारे वास्ते कान और आंखें और दिल
अन-श-अकुम व-ज-अ़-ल
बनाये (मगर) तुम बहुत कम शुक्र अदा करते
लकुमुस्सम्अ़ वल अब्सा-र वल
हो, कह दो कि वही तो है जिस ने तुमको
अफ़इ-द-त क़लीलम मा
ज़मीन में फ़ैला दिया और उसी के सामने
तश्कुरून० कुल हुवल्लज़ी
जमा किये जाओगे, और (कुफ़्फ़ार) कहते हैं
ज़-र-अकुम फ़िल अर्ज़ि व
कि अगर तुम सच्चे हो तो (आख़िर) यह
इलैहि तुह्शरून० व यक़ूलू-न
वादा कब पूरा होगा, (ए रसूल) तुम कह दो
मता हाज़ल वअ़्दु इन कुंतुम
कि (इस का) इल्म तो बस ख़ुदा को है और
सादिक़ीन० कुल इन्नमल
मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ (अज़ाब से) डराने

सूरः मुल्क

इ़ल्मु इ़ंदल्लाहि व इन्नमा
वाला हूं, तो जब यह लोग उसे क़रीब देख
अना नज़ीरुम्मुबीन० फ़
लेंगे तो (ख़ौफ़ के मारे) काफ़िरों के चहरे
लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़तन सीअत
बिगड़ जायेंगे और उनसे कहा जाएगा यह
वुजुहुल्लज़ी-न क-फ़-रु व
वही है जिसके तुम ख़्वास्तगार थे (ए रसूल)
क़ी-ल हाज़ल्लज़ी कुंतुम बिहि
तुम कह दो भला देखो तो कि अगर ख़ुदा
तद्दऊ़न० कुल अ़ रऐतुम
मुझको और मेरे साथियों को हलाक कर दे
इन अह-ल-कनियल्लाहु व
या हम पर रहम फ़रमाये तो काफ़िरों को
मम मअ़ि-य औ रहि-मना
दर्दनाक अज़ाब से कौन पनाह देगा, तुम
फ़मय युजीरुल काफ़िरी-न
कह दो कि वही (ख़ुदा) बड़ा रहम करने
मिन अज़ाबिन अ़लीम० कुल
वाला है जिस पर हम ईमान लाये और हम

हुवर रह़मानु आमन्ना बिहि
ने उसी पर भरोसा कर लिया है तो अंक़रीब
व अलैहि तवक्कल्ना फ़ स़
ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि कौन सरीह
तअ़लमू-न मन हुव फ़ी
गुमराही में (पड़ा) है (ए रसूल) तुम कह दो
ज़लालिम्मुबीन० कुल अ-रऐ
कि भला देखो तो कि अगर तुम्हारा पानी
तुम इन अस्ब-ह माऊकुम
ज़मीन के अंदर चला जाए तो कौन ऐसा है
ग़ौरा फ़ मंय यातीकुम
जो तुम्हारे लिए पानी का चश्मा बहा लाये।
बिमाइम्मअ़ीन